

# व्यावसायिक, कौशल आधारित शिक्षा



# भारत में व्यावसायिक और कौशल आधारित शिक्षा

## भारत में व्यावसायिक शिक्षा

व्यवसाय, व्यावसायिक और व्यावसायिकता तीन शब्द हैं जिन्हें हमें समझने की आवश्यकता है। एक व्यवसाय एक नौकरी है जिसे विशेष प्रशिक्षण और उच्च-स्तरीय शिक्षा के बाद संभाला जा सकता है। व्यावसायी उन लोगों का एक समूह होता है जो किसी विशेष व्यवसाय को करने के लिए प्रमाणित होते हैं। व्यावसायिकता एक विचार है जो एक विशेष व्यवसाय के ज्ञान और आचार-नीति के चारों ओर घूमता है।

व्यावसायिक पाठ्यक्रम न केवल प्रबंधन और उद्योग पर आधारित होते हैं, बल्कि शिक्षण, लेखन, संपादन, चित्रकला आदि जैसे विशेष कौशल में भी उपलब्ध होते हैं। एक छात्र द्वारा व्यावसायिक पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद वह प्रमाणित होता है या व्यावसायिक डिग्री प्राप्त करता है। उन्हें प्रमाणित करने के लिए पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में **हाथों से करके सीखने के लिए** इंटरनशिप शुरू की जाती है।

## व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार के कारण :

भारत जैसे देश में, हम देखते हैं कि अधिकांश छात्र व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में दाखिला लेते हैं। समय के साथ, व्यावसायिक पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले लोगों में कई गुना वृद्धि हुई है। यहाँ कुछ कारण बताए गए हैं कि व्यावसायिक शिक्षा पूरे भारत में क्यों फैली है :

1. पिछड़े वर्ग के छात्र और महिलाएं बड़ी संख्या में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में दाखिला लेते हैं जो प्रसार का मुख्य कारण रहा है।
2. भारत ने उन संस्थानों की संख्या में वृद्धि की है जो व्यावसायिक पाठ्यक्रम पेश करते हैं। इससे पहले, एकमात्र सार्वजनिक क्षेत्र ने व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को अपनाया था। आजकल, निजी संस्थानों ने भी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पेशकश शुरू कर दी है।
3. व्यावसायिक शिक्षा में विविधता और भिन्नता का जन्म व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार का कारण बना है। जैवप्रौद्योगिकी, डिजिटल मार्केटिंग जैसे कई नए पाठ्यक्रम विकसित हुए हैं, जो प्रसार का एक कारण हैं।

## व्यावसायिक शिक्षा और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आगे आया है और यह उन निजी संस्थानों को प्रोत्साहित करता है जो व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करते हैं। यह उन आशाजनक विश्वविद्यालयों को मानद विश्वविद्यालय की अनंतिम स्थिति प्रदान करता है जिनका अभी तक सभी कानूनी आवश्यकताओं का पालन करना शेष है।

मानद विश्वविद्यालय की स्थिति प्राप्त करने के लिए मानव संसाधन और विकास मंत्रालय के माध्यम से संस्थानों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में आवेदन करने की अनुमति है।

### भारत में व्यावसायिक निकाय :

1. भारतीय चिकित्सा परिषद
2. भारतीय दंतचिकित्सा परिषद
3. भारतीय नर्सिंग परिषद
4. वास्तुकला परिषद
5. भारतीय विधिज्ञ परिषद
6. भारतीय भेषजी परिषद
7. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)
8. भारतीय पुनर्वास परिषद
9. केंद्रीय होम्योपैथी परिषद
10. केंद्रीय भारतीय औषधि परिषद
11. भारतीय पशु चिकित्सा परिषद

### व्यावसायिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019

कस्तूरीरंगन समिति भारत की शिक्षा नीति का एक सरल और दृढ़ संकल्प प्रस्तुत करती है। व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा की निरंतरता में शामिल करके इसे महत्व दिया गया है।

व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार में डिजिटल संसाधनों का आगमन भी एक प्रमुख योगदान कारक है। SWAYAM (स्वयं) एक ऑनलाइन पोर्टल है जो मानव संसाधन और विकास मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया है। इसमें वरिष्ठ माध्यमिक से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक के पाठ्यक्रम शामिल हैं।

स्वयं प्रभा भी है जो 9 वीं कक्षा से आईआईटी स्तर तक की सामग्री को कवर करती है। इसके अलावा इसमें व्यावसायिक परीक्षा और प्रारंभिक पाठ्यक्रम भी शामिल हैं।

### भारत में कौशल आधारित शिक्षा

कौशल सभी को नियोजित करने के लिए एक प्रमुख आवश्यकता है। उच्च स्तर की शिक्षा और उच्च कौशल स्तर वाले व्यक्ति देश को एक बेहतर स्थान बना सकते हैं। शिक्षा और कौशल दोनों ही एक क्षेत्र के कार्यस्थल पर एक प्रभावी व्यक्ति होने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

नियोक्ता मुख्य रूप से उन व्यक्तियों की तलाश में जाते हैं जो संवाद कर सकते हैं, समस्याओं को हल कर सकते हैं और एक टीम के रूप में काम कर सकते हैं। किसी भी व्यक्ति में नेतृत्व कौशल और किसी व्यक्ति को एक नेता के रूप में दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता भी आवश्यक है।

भारतीय कौशल-आधारित शिक्षा एक विशाल पारिस्थितिकी तंत्र है। यह जटिल, विविध है और विषम जनसंख्या के लिए अलग-अलग स्तर के कौशल प्रदान करता है। भारत में कौशल आधारित शिक्षा दो व्यापक वर्गों में विभाजित है:

- शिक्षा और
- व्यावसायिक प्रशिक्षण

आइए हम भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक रूपरेखा देखें।

आयु वर्ग	शिक्षा
उम्र 6 से 14	सभी बच्चे प्रारंभिक शिक्षा से गुजरते हैं
उम्र 15 से 16	बच्चे या तो सामान्य माध्यमिक बोर्ड परीक्षा का चयन करते हैं या वे व्यावसायिक माध्यमिक शिक्षा का विकल्प चुन सकते हैं।
उम्र 17 से 18	जिन बच्चों ने माध्यमिक शिक्षा की थी, वे वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा के लिए पात्र हैं। जबकि जिन छात्रों ने एक व्यावसायिक तरीका अपनाया, वे 3 साल का पॉलिटेक्निक डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। व्यावसायिक शिक्षा पूरी करने वाले उम्मीदवार 1-2 साल के लिए शिल्पकार DGET भी ले सकते हैं और 2-4 साल के लिए प्रशिक्षुता (अपरेंटिसशिप) के लिए जा सकते हैं, जब 21 वर्ष के हो जाते हैं तो वे शिल्पकार बनेंगे।
उम्र 19 से 21	उम्मीदवारों जिन्होंने वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा पूर्ण कर ली है, वे 3 वर्ष के लिए अध्ययन या इंजीनियरिंग कॉलेजों के लिए स्नातक पाठ्यक्रम ले सकते हैं। पॉलिटेक्निक खत्म करने वाले अभ्यर्थी भी इंजीनियरिंग कॉलेजों में दाखिला ले सकते हैं। पॉलिटेक्निक पूरा करने वाले अभ्यर्थी 23 साल में एडवांस ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में दाखिला ले सकते हैं और टेक्नीशियन बन सकते हैं।
उम्र 24 से 26	स्नातक पूर्ण करने वाले उम्मीदवार पूर्ण करने के बाद परास्नातक कार्यक्रम लेते हैं जिससे वे इंजीनियर और टेक्नोलॉजिस्ट बन सकते हैं। यदि कोई उम्मीदवार अपने डॉक्टरेट कार्यक्रम को पूरा करता है तो वह वैज्ञानिक बन सकता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा को नियंत्रित करता है। कॉलेज शिक्षा (कला, विज्ञान, वाणिज्य, आदि) को विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा द्वारा पूरा किया जाता है। तकनीकी शिक्षा में इंजीनियरिंग शिक्षा और पॉलिटेक्निक शामिल हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) निधियों को नियंत्रित करता है, अनुदान देता है और विश्वविद्यालयों में शिक्षण, परीक्षा और अनुसंधान के लिए मानक निर्धारित करता है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) भारत में तकनीकी शिक्षा के लिए नियामक निकाय के रूप में कार्य करता है।

सामान्य रोजगार और प्रशिक्षण निदेशक (DGET) व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए नोडल संस्थान है। यह श्रम और रोजगार मंत्रालय के तहत काम करता है। DGET वह निकाय है जो नीतियों का निर्माण करता है, संबद्धता प्रदान करता है और प्रमाणन प्रदान करता है। यह उन सभी मामलों को देखता है जो व्यावसायिक प्रशिक्षण से संबंधित हैं।

### तकनीकी शिक्षा :

भारत में तकनीकी शिक्षा के परिदृश्य को निम्नलिखित कालक्रम से देखा जा सकता है :

- सिविल इंजीनियरों के प्रशिक्षण के लिए 1847 में रुड़की में उत्तर प्रदेश में पहला इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित किया गया था।
- कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास नामक तीन प्रांतों (प्रेसीडेंसी) में लगभग 1856 तक तीन इंजीनियरिंग कॉलेज खोले गए।
- मॉडरेट द्वारा जादवपुर में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी महाविद्यालय।
- पंडित मदन मोहन मालवीय (1917) के प्रयासों से बनारस विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था।
- 1930 के दशक में शिबपुर में बंगाल इंजीनियरिंग कॉलेज।

### नियामक निकाय :

1945 में एक सलाहकार संस्था के रूप में AICTE की स्थापना की गई।

वर्ष 1987 में संसद के एक अधिनियम द्वारा इसे सांविधिक दर्जा दिया गया था।

यह नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत के लिए नए तकनीकी संस्थानों को शुरू करने की मंजूरी देता है।

इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है और सात क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता, चेन्नई, कानपुर, मुंबई, चंडीगढ़, भोपाल और बंगलौर में स्थित हैं।

केंद्रीय वित्त पोषित संस्थान :

आईआईटी	23
एनआईटी	31
आईआईएम	20
आईआईआईटी	4
आईआईएससी, बेंगलोर	1
एनआईटीटीआर	4
आईआईएसईआर	5
अन्य	9

### तकनीकी शिक्षा में बाहरी सहायता प्राप्त परियोजनाएँ

1. तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम (TEQIP) : इसे तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए चल रहे प्रयासों को समृद्ध और समर्थन प्रदान करने के लिए 2002 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा शुरू किया गया था।

TEQIP चरण-I (2003-09) और TEQUIP चरण-II को विश्व बैंक की सहायता से लागू किया गया था।

तकनीशियन शिक्षा परियोजना-III: इसे पॉलिटेक्निक के उन्नयन के लिए विश्व बैंक की मदद से शुरू किया गया था।

### नीतिगत संरचना :

सरकार कौशल विकास को उन प्राथमिकताओं में से एक मानती है जिन्हें बढ़ाया जाना चाहिए। इसमें युवाओं की भागीदारी, महिलाओं की उच्च गतिविधि और मौजूदा प्रणाली की क्षमता में सुधार करने की बात कही गई है। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- 1961 का प्रशिक्षुता (अप्रेंटिसशिप) अधिनियम
- राष्ट्रीय कौशल नीति और
- राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF)।

### 1961 का प्रशिक्षुता अधिनियम

सभी प्रशिक्षुता कार्यक्रम इस अधिनियम द्वारा शासित हैं। प्रशिक्षण योजना श्रम और रोजगार और मानव संसाधन विकास द्वारा कार्यान्वित की जाती है। यह सुनिश्चित करता है कि नियोक्ताओं को उनके वास्तविक कार्य वातावरण से पहले पर्याप्त ज्ञान विस्तार (एक्सपोजर) मिले।



## राष्ट्रीय कौशल नीति

इसे 2009 में फिर से तैयार किया गया था ताकि कौशल आधारित विकास की विभिन्न चुनौतियों का समाधान करके रणनीति बनाई जा सके। इस नीति ने उन सभी गतिविधियों के लिए एक सामूहिक संरचना प्रदान की गई है जो हमारे देश में कौशल से संबंधित हैं। यह हमें हमारे देश में किए गए कौशल विकास प्रयासों के बारे में भी जानकारी देता है।

## प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)

यह कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) की प्रमुख योजना है। इस कौशल प्रमाणन योजना का उद्देश्य बड़ी संख्या में भारतीय युवाओं को उद्योग विशिष्ट कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने में सक्षम बनाना है।

उनके लिए आजीविका सुनिश्चित करना।

## राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (NSQF)

इस रूपरेखा को 27 दिसंबर 2013 को अधिसूचित किया गया था। यह एक योग्यता आधारित रूपरेखा है। यह ज्ञान, कौशल, और योग्यता के स्तरों की एक श्रृंखला के अनुसार सभी योग्यताओं को व्यवस्थित करने में मदद करती है। NSQF के तहत, शिक्षार्थी योग्यता के लिए प्रमाणन प्राप्त कर सकता है। यह राष्ट्रीय कौशल योग्यता समिति के माध्यम से लागू किया गया है जिसमें सभी हितधारक हैं।

## भारत में कौशल विकास के नोडल निकाय :

निम्नलिखित निकाय कौशल-आधारित विकास को नियंत्रित करते हैं

1. **कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय:** इसकी घोषणा नवंबर 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी। यह अन्य सभी मंत्रालयों को एकजुटता से काम करने के लिए एक साथ लाता है।
2. **एमएचआरडी :** यह पॉलिटेक्निक संस्थानों को नियंत्रित करता है और अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग की योजना में शामिल है। इस निकाय ने 9 वीं कक्षा के बाद व्यावसायिक प्रशिक्षण की शुरुआत की।
3. **केंद्रीय मंत्रालय :** केंद्र सरकार के 21 मंत्रालय कौशल विकास के उद्देश्य पर काम करते हैं। वे सार्वजनिक निजी भागीदारी से क्षेत्रों को अपनाते हैं।
4. **एनएसडीसी:** यह एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी है [एनएसपी के तहत]। यह मानकों को उन्नत करने, निजी क्षेत्रों का समर्थन करने और उत्प्रेरक पहलों को प्राथमिकता देने का काम करता है।
5. **सेक्टर स्किल काउंसिल :** वे NSDC द्वारा प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाने के लिए वित्त पोषित हैं।

6. **NCVT, SCVT और भारतीय गुणवत्ता परिषद** : ये निकाय देश भर के सभी संस्थानों में मानकों की एकरूपता सुनिश्चित करते हैं। इसे वर्ष 1956 में स्थापित किया गया था।
7. **औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI)** : ये संस्थान विशेषज्ञ कौशल पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उच्चतम कौशल सेट और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। DGET, ITI क्षेत्रों को नियंत्रित करता है।

### तथ्य

- 76 विश्वविद्यालयों के साथ राजस्थान सबसे अधिक विश्वविद्यालयों वाला राज्य है।
- 28 विश्वविद्यालयों के साथ तमिलनाडु सबसे अधिक मानद विश्वविद्यालयों वाला राज्य है।
- उत्तर प्रदेश और गुजरात में सबसे अधिक राज्य विश्वविद्यालय, प्रत्येक में 28, हैं।
- राजस्थान में सबसे अधिक निजी विश्वविद्यालय हैं, जिनकी संख्या 46 है।
- उत्तर प्रदेश में 6 केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं।

gradeup



## Professional And Skill Based Education In India

### Professional Education In India

Profession, Professional and Professionalism are three terms that we need to understand. A *profession* is a job that can be handled after specialized training and higher-level education. *Professionals* are a group of people who are certified to perform a particular profession. *Professionalism* is an idea that revolves around the knowledge and ethics that a particular profession takes.

Professional courses are not only based in management and industry but also are available in special skills like teaching, writing, editing, painting, etc. After a student completes the professional course he or she is certified or receives a professional degree. Internships with hands-on treatment are taken up as a part of the course to get them certified.

### Reasons for the expanse of professional education:

In a country like India, we see that most students enroll in professional courses. Over time, the people who study professional courses have increased multifold. Here are some of the reasons why professional education has spread across India:

1. Backward class students and women enroll in professional courses in large numbers which have been the main reason for the spread.
2. India has increased the number of institutions that offer professional courses. Earlier, the only public sector took up the professional courses. Nowadays, even private institutions have started offering professional courses.
3. The birth of diversity and variety in professional education has caused the spread of professional education. New courses like biotechnology,

digital marketing and many more that have evolved have been a reason for the spread.

### **Professional Education and the University Grants Commission**

University Grants Commission has come forward and it encourages the private institutions that offer professional education. It offers the provisional status of Deemed Universities to promising universities that are yet to comply with all the legal requirements.

Institutions are allowed to apply to the University Grants Commission through the Ministry of Human Resource and Development for acquiring the deemed status.

#### **Professional bodies in India:**

1. Medical Council of India
2. Dental Council of India
3. India Nursing Council
4. Council of Architecture
5. Bar Council of India
6. Pharmacy Council of India
7. Indian Council of Agricultural Research (ICAR)
8. Rehabilitation Council of India
9. Central Council of Homeopathy
10. Central Council of Indian Medicine
11. Veterinary Council of India

### **Professional Education and National Education Policy, 2019**

The Kasturirangan Committee presents a simple and determined articulation of India's Education Policy. Vocational Education has been given importance by incorporating it across the continuum of education.

The arrival of digital resources is also a major contributing factor to the expansion of professional education. SWAYAM is an online portal that has

been launched by the Ministry of Human Resource and Development. This contains courses from senior secondary to the post-graduate level.

There is also Swayam Prabha that covers the content from 9th grade to the IIT level. Apart from this it also covers professional exams and preparatory courses.

## Skill Based Education in India

Skill is a major requirement for all to be employed. Individuals with a high level of education and higher skill levels can make a country a better place. Both education and skill are equally important for being an effective individual at the workplace of a field.

Employers mainly go in search of individuals who can communicate, solve problems and work as a team. Leadership skills and ability of an individual to motivate others as a leader is also essential in any individual.

Indian skill-based education is a vast ecosystem. It is complex, diverse and provides varying levels of skills for a heterogeneous population. Skill-based education in India is divided into two broad classes:

- Education and
- Vocational Training

Let us look at an outline of the Indian Education system.

AGE GROUP	EDUCATION
Age 6 to 14	All children undergo elementary education
Age 15 to 16	The children either choose the General Secondary Board exam or they can opt for Vocational Secondary Education.
Age 17 to 18	Children who did Secondary Education are eligible for Senior Secondary Education. While the students who took up a vocational way can go on to do a 3 years Polytechnic Diploma course. The candidates who complete the vocational education can also take up Craftsman DGET for 1-2 years and go on for Apprenticeship for 2-4 years when they are 21 years old to become a <b>Craftsman</b> .
Age 19 to 21	Candidates who finished Senior Secondary Education take up Undergraduate courses for 3 years to study or Engineering Colleges. Candidates who finish polytechnics also can go on to enrolling themselves into Engineering Colleges. Candidates who complete

	polytechnics can enroll Advanced Training Institutes at 23 years and become <b>Technicians</b> .
Age 24 to 26	The candidates who finish their undergraduate take up Masters Programs after completing which they can become <b>Engineers</b> and <b>Technologists</b> . If a candidate completes their Doctorate Program can become a <b>Scientist</b> .

Ministry of Human Resource Development governs elementary, secondary and higher education. College education (Arts, Science, Commerce, etc.) is catered by University and Higher Education. Technical Education comprises Engineering education and Polytechnics.

University Grants Commission (UGC) governs the funds, grants and sets standards for teaching, examination, and research in Universities. All India Council for Technical Education (AICTE) acts as the regulatory body for Technical Education in India.

Director of General Employment & Training (DGET) is the nodal institution for vocational training. It works under the Ministry of Labor and Employment. DGET is the body that formulates policies, grants affiliations and provides certification. It all deals with all the matters that are related to vocational training.

### Technical Education:

The technical education scenario in India could be traced with the following chronology:

- The First engineering college was established in Uttar Pradesh in 1847 for training of civil engineers at Roorkee.
- Three engineering colleges were opened by about 1856 in three presidencies, namely Calcutta, Bombay and Madras.
- College of Engineering and Technology at Jadavpur, by the Moderates.
- University of Banaras was set up with the efforts of Pandit Madan Mohan Malaviya (1917).
- The Bengal Engineering College at Shibpur in the 1930s.

## **Regulating Body:**

AICTE set up in 1945 as an advisory body.

In the year 1987, it was given a statutory status by an act of Parliament.

It grants approval for starting new technical institutions for the introduction of new courses.

It has its headquarters in New Delhi and has seven regional offices located in New Delhi and has seven regional offices located at Kolkata, Chennai, Kanpur, Mumbai, Chandigarh, Bhopal and Bangalore.

## **Centrally funded institutes:**

IITs	23		
NITs	31		
IIMs	20		
IIITs	04		
IISc, Bengaluru	01	NITTRs	4
IISERs	5	Others	9

## **Externally Aided Projects In Technical Education**

1. Technical Education Quality Improvement Programme (TEQIP) : was launched by MHRD in 2002 to upscale and support the ongoing efforts in improving the quality of technical education.

TEQIP phase I (2003-09) and TEQUIP Phase II were implemented with the assistance of World Bank.

Technician Education Project-III: It was launched with the help of World Bank for the upgradation of polytechnics.

## **The Policy Framework:**

The government considers skill development as one of the priorities that have to be enhanced. It seeks the participation of youth, high activity of women and improves the capability of the existing system. This includes

- The Apprenticeship Act of 1961
- The National Skill Policy and
- The National Skills Qualification Framework (NSQF).

### **The Apprenticeship Act of 1961**

All Apprenticeship programs are governed by this Act. The training scheme is implemented by the Labor and Employment and Human Resource Development. This ensures that employers get adequate exposure before their real work environment.

### **National Skill Policy**

This was formulated back in 2009 to formulate strategies by addressing the different challenges that skill-based development. This policy has provided an umbrella framework for all the activities that are related to skill in our country. It also gives us details about the skill development efforts taken in our country.

### **Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY)**

It is the flagship scheme of the Ministry of Skill Development & Entrepreneurship (MSDE). The objective of this Skill Certification Scheme is to enable a large number of Indian youth to take up industry specific skill training. To ensure a livelihood for them.

### **The National Skill Qualification Framework**

This framework was notified on 27th December 2013. This is a competency-based framework. It helps in organizing all the qualifications according to a series of levels of knowledge, skills, and aptitude. Under NSQF, the learner can acquire the certification for competency. This is implemented through the National Skills Qualifications Committee which has all the stakeholders.

## The Nodal Bodies of Skill Development in India:

The following bodies govern the skill-based development

1. **Ministry of Skill Development and Entrepreneurship**: It was announced by Prime Minister Narendra Modi in November 2014. It brings together all the other ministries to work in unity.
2. **MHRD**: Governs the polytechnic institutions and is involved in the scheme of Apprenticeship Training. This body introduced the Vocational Training after 9th grade.
3. **Central Ministries**: The 21 Ministries of the central government work on the purpose of skill development. They adopt sectors and form the public-private partnership.
4. **NSDC**: This is a public-private partnership [under the NSP]. It works to upgrade the standards, support private sectors and prioritize the catalytic initiatives.
5. **Sector Skill Councils**: They are funded by the NSDC to bring the key stakeholders together.
6. **NCVT, SCVT and Quality Council of India**: These bodies ensure the uniformity of standards in all the institutions across the country. This was set up in the year 1956.
7. **Industrial Training Institutes**: These institutes focus on specializing skills and providing high-end skill sets and training. The DGET governs the ITI sectors.

## FACTS

- The state with the most universities - Rajasthan with 76 universities.
- The state with the most deemed universities- Tamil Nadu with 28 universities.
- Uttar Pradesh and Gujarat have the most state universities, 28 each.
- Rajasthan has the most private universities, 46 in number.
- Uttar Pradesh has 6 central universities.